# अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ

## अ.भा. साधारण सभा, भोपाल

### आश्विन शुक्ल द्वितीया एवं तृतीया वि.स. 2081, 4-5 अक्टूबर, 2024

**प्रस्ताव - 2**

# हमारा शैक्षिक संस्थान हमारा तीर्थ बने

अतीत में, जब भारत के शिक्षा केंद्र तीर्थों के समान थे, तब यह राष्ट्र जगद्गुरु के गौरव से विभूषित था। तब कोई आचार्य यह गर्वपूर्वक कह सकता था कि दुनिया भर के लोग यहाँ आएं और हमसे शिक्षा प्राप्त करें।– **'स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।'** यह केवल हमारी आत्मप्रशस्ति न थी, बल्कि मेगस्थनीज़, फाह्यान, ह्वेनसांग, इत्सिंग, इब्नबतूता इत्यादि विदेशी लेखकों ने भी हमारी शिक्षा-व्यवस्था का मुक्तकण्ठ से यशोगान किया है। किन्तु, विदेशी दासता के सुदीर्घ दौर में हमारे स्वत्व का दलन हुआ, आत्म-विस्मरण हुआ, स्वाभिमान का क्षरण हुआ और शनैः शनैः हमारा वह शिक्षा-गौरव भी धूसर होता चला गया। उस विस्मृत-विलुप्त शैक्षिक गौरव की पुनः प्रतिष्ठा करना वर्तमान समय की एक बड़ी चुनौती हमारे समक्ष है।

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ की आकांक्षा है किअपने शिक्षा संस्थान एक तीर्थ के समान बनें, जहाँ शिक्षा, संस्कृति, ज्ञान और विज्ञान की शुद्ध, सात्विक और समावेशी शक्ति हो। समाज और शैक्षिक संस्थानों में भावनात्मक अन्तःसम्बन्ध स्थापित हो। ये शिक्षा के केंद्र अपनी भौतिक संरचना, प्राकृतिक सुंदरता और ज्ञान के प्रसार के माध्यम से लोगों के लिए प्रेरणा और श्रद्धा का स्थान बनें। सभी प्रकार की नकारात्मक प्रवृत्तियों को खत्म करने और सकारात्मक प्रवृत्तियों को बढ़ावा देने वाले आत्म-उन्नति के उत्कृष्ट केंद्र बनें। यहाँ की पवित्रता और सकारात्मक ऊर्जा लोगों को आकर्षित कर उन्हें प्रेरित करें और ये संस्थान सामाजिक परिवर्तन के एक जीवंत केंद्र बनें।

हमारे विद्यालय-महाविद्यालय-विश्वविद्यालय विद्या तीर्थ के रूप में विकसित हों, एतदर्थ अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ की यह साधारण सभा प्रस्ताव करती है कि -

- छात्रवर्ग की महिमा श्रेष्ठ शिक्षकों से और शिक्षकों की महिमा गुणग्राही छात्रों से होती है तथा छात्र और शिक्षक इन दोनों के समवाय से शिक्षा-संस्थान की महिमा-शोभा होती है। किन्तु आज शिक्षा-संस्थान, विशेषतः उच्चशिक्षा के अकादमिक संस्थानों में कक्षाओं में विद्यार्थियों की न्यून उपस्थिति चिंता का विषय है। अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ का स्पष्ट मानना है कि शिक्षकों को अपने संस्थान में मनोयोगपूर्वक पूरे समय न केवल उपस्थित रहना चाहिए, बल्कि सभी कक्षाओं का नियमित और सुव्यवस्थित संचालन भी सुनिश्चित करना चाहिए। हमें उपनिषद की उस चतुरंगिणी विद्या-संहिता का स्मरण रखना चाहिए, जिसमें कहा गया है कि - आचार्य पूर्वरूप है, शिष्य उत्तररूप है, दोनों के संयोग से ही विद्या की प्राप्ति होती है और प्रवचन (अध्यापन) आचार्य और शिष्य के बीच की जोड़ने वाली कड़ी है। इसलिए, हमें अध्यापन में लापरवाही कर पाप का भागी नहीं बनना चाहिए।
- शिक्षा-निकाय आचार्य-केन्द्रित हों, आचार्य शिष्य-केन्द्रित रहें, आचार्य और शिष्य की युति अध्ययन-केन्द्रित हो तथा अध्ययन आनन्द-केन्द्रित हो। इस चतुष्पदी व्यवस्था के निर्माण तथा अनुपालन में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह शिक्षक करें। शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य अंतर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है, **''सा विद्या या विमुक्तये''** यही विद्या की सच्ची परिभाषा है। लेकिन आज के समय की मांग यह है कि हमें परा और अपरा दोनों प्रकार की विद्या चाहिए–ऐसी शिक्षा जो निःश्रेयस् (आध्यात्मिक उन्नति) और अभ्युदय (सांसारिक उन्नति) दोनों प्रदान कर सके। हमें ऐसी विद्या चाहिए जो श्रेयस्करी (कल्याणकारी) होने के साथ-साथ अर्थकरी (धन उपार्जन करने वाली) हो। यही राष्ट्रीय शिक्षा नीति का उद्देश्य भी है और हमें अपने शैक्षणिक संस्थानों और पाठ्यक्रमों को इसी के अनुरूप बनाना होगा।
- शिक्षक को कक्षा में केवल पाठ्यवस्तु का अध्यापन करने तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि स्वविवेक से जीवनोपयोगी व्यवहारिक ज्ञान, व्यक्तित्व विकास के आवश्यक सूत्र, नैतिक आचरण और सद्गुणों का उपदेश भी समय-समय पर देना चाहिए। साधारण सभा का यह सुविचारित मत है कि विद्यार्थियों को सांस्कृतिक प्रदूषण, मोबाइल के अनियंत्रित उपयोग, नशे और अन्य व्यसनों से बचाने के लिए उचित मार्गदर्शन देने और समुचित दृष्टिकोण विकसित करने की गंभीर आवश्यकता है। शिक्षक को अपने व्यक्तित्व का निरंतर परिष्कार करते रहना चाहिए। गुरु का आचरण इतना अनुकरणीय और आदर्श होना चाहिए कि उसका मौन भी शिक्षाप्रद हो और शिष्य बिना किसी शब्द के ही उससे प्रेरणा प्राप्त करें।

- संस्थान के सभी शिक्षक, शिक्षार्थी और कर्मचारी परिसर की स्वच्छता के लिए श्रद्धापूर्वक सामूहिक उत्तरदायित्व का वहन करते हुए प्रयासरत रहें। नियमित सफ़ाई के अतिरिक्त विशिष्ट अवसरों पर सामूहिक सफाई अभियान चले। कचरापात्र और झाड़ू सभी के लिए स्वत:प्रेरणा से प्रयोज्य हों। सिंगल यूज़ प्लास्टिक, पीवीसी बैनर-फ्लैक्स और तथाकथित 'डिस्पोजेबल' नामक कचरे से परिसर पूर्णत: मुक्त रहे, इसका निरन्तर प्रयास हो। संस्थान में शिक्षक और विद्यार्थियों के बीच ऐसा पारिवारिक माहौल विकसित हो कि आवश्यकता पड़ने पर शिक्षक स्वाभाविक रूप से संरक्षक की तरह स्वयं प्रेरित होकर विद्यार्थियों की शुल्क, गणवेश और अध्ययन सामग्री की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए हमेशा तत्पर रहें।
- संस्थान में सर्जनात्मक क्षमताओं की सशक्त अभिव्यक्ति के लिए लेखन, भाषण, गायन, खेल-कूद, योग तथा ललित कला-कौशल इत्यादि के क्षेत्र में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का वातावरण बने। प्रत्येक संस्थान में भारतमाता मन्दिर, सरस्वती मन्दिर, समृद्ध पुस्तकालय एवं वाचनालय तथा महापुरुषों का गलियारा हो तथा भित्ति-लेखन के रूप में बोधवाक्य, सुभाषित, नीति-वचन इत्यादि यथास्थान अंकित हों। विद्यालय एवं उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रमों में राष्ट्र गौरव बढ़ाने वाले इतिहास और महापुरुषों की योगदान को समुचित स्थान मिलें, ये पाठ्यक्रम निर्माण करने वाले शिक्षकों और शिक्षा अधिकारियों की महती जिम्मेदारी है। विभिन्न नैमित्तिक कार्यक्रमों के माध्यम से भी इस संबंध में विद्यार्थियों को जानकारी मिले और उनमें स्वाभिमान का भाव जागृत हो इसका प्रयास हम सभी को करना चाहिए।
- अभिभावकों और शिक्षकों के बीच परिवारिक संबंध स्थापित करने के लिए नियमित अंतराल पर शिक्षक-अभिभावक बैठक और संवाद की सुनियोजित परम्परा विकसित हो। सभी विद्यार्थियों में परस्पर आत्मीयता, सद्भाव, श्रम-निष्ठा और पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए समय-समय पर संस्थान में सामूहिक वृक्षारोपण, श्रमानुभव, कक्षाओं की स्वच्छता और परिसर सौंदर्यकरण के कार्यक्रम आयोजित किए जाएं। संस्थान का समग्र वातावरण सांस्कृतिक और सामाजिक जागरूकता का केंद्र बने, इसके लिए सामूहिक प्रार्थना, गीत, प्रेरक कहानियाँ जैसी महत्त्वपूर्ण गतिविधियाँ संस्थान की दैनिक गतिविधियों का अनिवार्य हिस्सा बनें।

कुछ स्थानों पर महासंघ के कार्यकर्ताओं ने अपने समर्पण और परिश्रम से अपने शिक्षण संस्थानों के अकादमिक और भौतिक परिदृश्य को प्रेरक रूप से परिवर्तित करके उदाहरण प्रस्तुत किया है किंतु यदि भारत के विश्व गुरुत्व की पुनर्स्थापना करनी है तो बड़ी मात्रा में सर्व दूर परिवर्तन की आवश्यकता है। एतदर्थ अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ की यह साधारण सभा अपने सदस्यों सहित सभी शिक्षकों इस पवित्र कार्य में जुट्ने का आह्वान करते हुए यह संकल्प व्यक्त करती है कि कुछ लोग बाहर तीर्थ खोजते हैं और कुछ लोग अपने स्थान को ही अपने तप से तीर्थ बना लेते हैं। शास्त्र कहता है कि तप से ही सिद्धि मिलती है, तप ही प्रत्येक साधन का मूल है - 'तपोमूलंहिसाधनम्।' हमें भी अपने तप से अपने शिक्षा-संस्थानों को तीर्थ बनाना है।

❑❑❑